हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको दर्पण

HUDCO DARPAN

अंक 34, अक्टूबर 2025 | Issue 34, October 2025

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
Housing and Urban Development Corporation Limited (HUDCO)

MESSAGE

Dear Colleagues,

In today's fast paced world, the phrase 'Work Life Balance' is more than a slogan—it is fundamental to both our personal well being and the success of our organization. As your Chairman, I believe that nurturing a culture where everyone can thrive at work and outside it, is one of our highest priorities.

Integrating hobbies into our daily routines is essential for maintaining a balanced and fulfilling life. They not only provide relaxation and joy but also contribute to our overall development and success. Engaging in hobbies such as painting, sports, crafting, theatre, singing, dancing cooking, etc. can offer a much-needed respite from the daily grind. These activities not only provide relaxation but also stimulate creativity, enhance problem-solving skills, and foster a sense of satisfaction.

Another powerful, often under appreciated habit that supports this balance—and strengthens our ties as a community—is writing. Writing is more than putting words on a page; it is a trusted medium of expression. It gives voice to ideas, reflections, hopes and challenges. It allows us to share our individual experiences, connect with others, and deepen understanding. Whether it is journaling, blogging, contributing to our publications, or simply writing a thoughtful email, writing encourages clarity of thought, reflection, and helps in reducing mental clutter. HUDCO Darpan, published twice every year, provides a platform for employees to unleash their creativity through stories, poems, paintings, travelogues, etc. Other forms of accomplishments and artistic expressions by the employees also find a feature in the magazine.

When each individual has the space to rest, to care, to enjoy, and to pursue interests beyond tasks and deadlines, our collective creativity, energy and engagement will increase manifold. Let us embrace the diverse activities that enrich our lives and encourage a harmonious blend of work and personal fulfilment.

Sanjay Kulshrestha
Chairman & Managing Director

CONTENT

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	The Paradox of Life	Jankee Gupta	4
2	ग़ज़ल	मोहम्मद रफी खान	4
3	अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए	आशीष सिंह	5
4	Natural Scenery (Drawing)	Shanaya Singh	5
5	Moon Light (Drawing)	Lakshya Rawat	5
6	एनबीएफसी को रूपांतरित करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका	हेमलता शर्मा	6-8
7	Letters to India : Vision for Viksit Bharat 2047		9-15
8	ओज भरी वाणी	सोनिया	16
9	एक दूजे के लिए (पक्षी का जोड़ा)	साकेत श्रीवास्तव	17
10	Panel Discussion on Green Buildings in Residential Sector	Debesh Chakraborty	18
11	My HUDCO Story So Far: From Interview Hall to Workplace	Vishwajeet Jaiswal	19
12	Marriage – A Problem or A Solution?	Vishal Kumar	20
13	ऐ वतन....	ऋषभ चौधरी	21
14	जिंदा रहना है तो ...	कुलदीप कौर	21
15	Climate Change in India: Patterns, Impacts and the Solutions	Kuntal Ghosh	22-23

The Paradox of Life

Life often unfolds as a curious paradox, moments of despair quietly coexisting with sparks of joy, much like darkness lingering beside a flickering flame. It teaches us that sorrow and happiness are not sequential chapters but overlapping verses in the same story.
There are times when silence sits heavily within us, yet the sound of laughter echoes nearby. Pain may clutch one corner of our existence, while hope peeks gently from another. This coexistence is not a contradiction; it is the very design of life. To recognize that every hardship carries within it the seed of resilience, and every joy carries a whisper of fragility, is to truly understand the human experience.
Life is never a straight path of clarity. It is filled with the dust of uncertainty, the pull of desires, and the weight of responsibilities. Yet, even amid this muddle, the human spirit continues to seek beauty - a glimpse of light in the most ordinary of places. That pursuit itself is what makes us alive.

What often sustains us is not the absence of pain but the presence of balance. To sit with grief without losing sight of joy, to embrace solitude while knowing love exists somewhere near. This is the wisdom life offers. It is in acknowledging both sides, the ache and the comfort, that we find harmony.
We often think of darkness as something to run away from. But even in the thickest night, there's always a small lamp glowing somewhere. That little spark may not chase away the shadows, but it reminds us that light exists. That reminder is HOPE.

Perhaps the truest lesson is that life is not about escaping the shadows, but about learning to let the shadows and light dance together. Happiness becomes profound when we have known sorrow, and sorrow becomes bearable when we believe in the possibility of joy.

Jankee Gupta
TO(A)

ग़ज़ल

अहले नज़र की दूरबीं आंखों में आ गया
मेरा कलाम जबकि रिसालों *(Manual)* में आ गया

जिस दिन से तुम मिले हो यही लगता है मुझे
गुलज़ार आरज़ू मेरे हाथों में आ गया

उसको मिलीं ज़माने की असाईशें *(Facilities)* तमाम
सारे जहां का गम मेरे कासों *(Kind of destiny)* में आ गया

शादी रचाई उसने जो घर के दबाव में
फिर मै भी गांव छोड़ के शहरों में आ गया

उस महजबीं की नज़रे करम की नवाजिशें
सदियों का रतजगा मेरी आंखों में आ गया

जब तक था ज़िंदा चारों तरफ धूम थी मेरी
किस्से की तरह फिर मैं किताबों में आ गया

गद्दी नशीन लोगों ने ऐसा बुना था जाल
सैय्याद *(Hunter)* ही बिछे हुए जालों में आ गया

दिल का करार छिन गया बेचैनियां बढ़ीं
'रफी' मैं जब भी ग़ैर की बातों में आ गया

मोहम्मद रफी खान
प्रशिक्षु अधिकारी (परि.)

अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए

अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए
दिल का चैन फिर ना खो जाए
वक़्त बेवक़्त की बेचैनी बढाना
तन्हा रातों में यूं ही जगाना
रात भर चाँद को देख के मुस्कुराना
आँखों ही आँखों में निशाने लगाना
अभी तो ढंग से बात भी नहीं हुई है
एक झलक मात्र से सद्बुद्धि खो गई है
बस अब ऐसा पागलपन फिर न छाए
अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए।

अब मिलने मिलाने की हुई है शुरुआत
और बिन मौसम हो गई है बरसात
भीग रहें हैं हम तो उसमें
लेकर उसके हाथों में हाथ
उसकी काली जुल्फों की छाओं में
उसकी चंचल, नर्म अदाओं में
घंटो बिन सर पैर की बातों में
कब सुबह से शाम ख़राब हो जाए
अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए।

लोगों की अब नज़रों में आ गए हैं
न चाहते हुए घरवालों से टकरा गए हैं
पढाई नौकरी की चिंता कहीं धूल फांक रही है
मेरी शोना-बाबू की कॉल आ रही है
बिना जूते चप्पल छत पे भागे नंगे पैर
अब घंटो बिन खाएं पिये होती रहेगी सैर
दुनिया तो कब अपनी थी
इस प्यार के चलते अपने भी हो गए पराए
बस अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए

बड़ा मीठा लगता है आशिकी में रूठना मनाना
पास हो वो तो बेमतलब है सारा ज़माना
ग़लतफ़हमी की धुंध जब छाने लगी
मेरी मोहब्बत मुझपर ही मुस्कुराने लगी
यहाँ आगाज़ लिया एक नए पागलपन ने
कुछ पुरानी कुछ नई सी उलझन ने
इस प्यार के चक्कर में इतना कुछ हो जाता है
दिल रोता है लेकिन आंसू एक नहीं आता है
अब घुट घुट के रोता है दिल अकेले में
रह रह के उठता है दर्द सीने में
सोचने की शक्ति माँ बाप की भक्ति और मन की शांति
इस सिलसिले में ये सब कुछ खो जाए
हे भगवन! अब ये प्यार हमें फिर ना हो जाए।

आशीष सिंह
सहायक महाप्रबंधक (सीसी)

Shanaya Singh
D/o - Ashish Singh
AGM (CC)

Lakshya Rawat
S/o - Nandan Rawat
Graphic Designer (CC)

एनबीएफसी (NBFCs) को रूपांतरित करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

ग़ैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (NBFCs) भारत की वित्तीय प्रणाली का एक अहम हिस्सा बन चुकी हैं। ये पारंपरिक बैंकों और उन ग्राहकों के बीच की खाई को पाटने का कार्य करती हैं, जिन्हें अक्सर बैंकिंग सेवाओं से वंचित रहना पड़ता है। तेज़ी से बढ़ते डिजिटलीकरण और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच, एनबीएफसी अब व्यापक स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को अपना रही हैं, ताकि कार्यकुशलता बढ़ाई जा सके, जोखिम प्रबंधन को सुदृढ़ किया जा सके और ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान किया जा सके।

1. ग्राहक अनुभव में सुधार

AI-सक्षम चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट्स ग्राहक सेवा को नई दिशा दे रहे हैं। ये ग्राहकों को 24×7 सहायता प्रदान करते हैं और बिना मानव हस्तक्षेप के समय पर जवाब सुनिश्चित करते हैं। ये स्मार्ट सिस्टम बैलेंस जांच, पुनर्भुगतान शेड्यूल, और ऋण स्थिति जैसी सामान्य पूछताछ को संभाल सकते हैं, जिससे ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है और सेवा टीमों का बोझ कम होता है। नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) की मदद से चैटबॉट्स ग्राहक के इरादों को अधिक सटीकता से समझ पाते हैं, जिससे संवाद सहज और मानवीय बन जाता है। इसके साथ ही, ये तकनीक ग्राहकों को स्वचालित ऋण आवेदन सहायता देती है और पात्रता जांच से लेकर दस्तावेज़ अपलोड तथा आवेदन जमा करने तक मार्गदर्शन करती है। साथ ही, AI ग्राहकों की प्रोफ़ाइल और व्यवहारिक पैटर्न का विश्लेषण करके व्यक्तिगत वित्तीय उत्पादों की सिफारिश करता है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, जहाँ डिजिटल साक्षरता और भाषा संबंधी बाधाएँ बड़ी चुनौती होती हैं, AI-आधारित समाधान वॉयस और क्षेत्रीय भाषा समर्थन देकर वित्तीय सेवाओं को और अधिक सुलभ और समावेशी बना रहे हैं।

2. बेहतर क्रेडिट जोखिम आकलन

पारंपरिक क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल केवल वित्तीय इतिहास और पुनर्भुगतान व्यवहार पर आधारित होते हैं, जबकि AI-आधारित क्रेडिट आकलन प्रणाली अधिक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है। ये बिजली-पानी बिलों का भुगतान, मोबाइल उपयोग, ऑनलाइन लेन-देन पैटर्न और सामाजिक व्यवहार जैसे वैकल्पिक डेटा स्रोतों का विश्लेषण करती हैं। इस विस्तारित डेटा सेट की मदद से एनबीएफसी नए-से-क्रेडिट (NTC) ग्राहकों की क्रेडिट योग्यता का सही आकलन कर पाती हैं, जिन्हें सामान्यतः पारंपरिक बैंकिंग से बाहर रखा जाता है। इस प्रकार, AI न केवल ऋण डिफ़ॉल्ट जोखिम को कम करता है बल्कि अंडरराइटिंग की सटीकता भी बढ़ाता है। साथ ही, मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म के प्रयोग से क्रेडिट मूल्यांकन प्रक्रिया तेज़ होती है, जिससे ऋण स्वीकृति तेजी से और न्यूनतम मानव पक्षपात के साथ संभव हो पाती है। इसका परिणाम है वित्तीय समावेशन और वंचित वर्गों के लिए क्रेडिट तक बेहतर पहुँच।

3. धोखाधड़ी का पता लगाना और रोकथाम

AI, एनबीएफसी को वित्तीय धोखाधड़ी से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह असामान्य पैटर्न और संदिग्ध गतिविधियों का वास्तविक समय में पता लगाता है। पारंपरिक नियम-आधारित प्रणालियों के विपरीत, AI-आधारित धोखाधड़ी पहचान समाधान मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म पर आधारित होते हैं, जो पिछले धोखाधड़ी मामलों से लगातार सीखते हैं और जटिल अनियमितताओं की पहचान करने की

क्षमता विकसित करते हैं। रीयल-टाइम मॉनिटरिंग के ज़रिए एनबीएफसी तुरंत अनियमित लेन-देन पकड़ सकते हैं, जिससे वित्तीय नुकसान को न्यूनतम किया जा सकता है। साथ ही, AI भविष्यसूचक अलर्ट भेजता है जो संभावित धोखाधड़ी की चेतावनी पहले ही दे देता है। इसके अतिरिक्त, चेहरे की पहचान, फिंगरप्रिंट स्कैन और वॉयस ऑथेंटिकेशन जैसे बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन तरीकों के इस्तेमाल से पहचान की चोरी और अनधिकृत पहुँच की संभावना बहुत कम हो जाती है। इस प्रकार, AI न केवल वित्तीय सुरक्षा को मजबूत करता है बल्कि ग्राहकों के बीच भरोसा भी बढ़ाता है।

4. प्रक्रिया स्वचालन और लागत दक्षता

रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA) और AI का संयोजन एनबीएफसी के बैक-ऑफिस संचालन को पूरी तरह बदल रहा है। KYC सत्यापन, दस्तावेज़ प्रसंस्करण और अनुपालन रिपोर्टिंग जैसे दोहराए जाने वाले और समय लेने वाले कार्य अब तेज़ी और अधिक सटीकता के साथ स्वचालित किए जा सकते हैं। इससे संचालन लागत कम होती है और टर्नअराउंड टाइम बेहतर होता है। उदाहरण के लिए, AI-सक्षम RPA टूल्स ऋण आवेदन से लेकर वितरण तक की पूरी प्रक्रिया को स्वचालित कर सकते हैं, जिससे निर्णय लेने की गति तेज़ होती है। ग्राहक ऑनबोर्डिंग प्रक्रिया भी सरल हो जाती है, क्योंकि दस्तावेज़ सत्यापन और पहचान प्रमाणीकरण कुछ ही मिनटों में पूरे किए जा सकते हैं। साथ ही, AI-आधारित स्वचालन त्रुटिरहित अनुपालन रिपोर्टिंग सुनिश्चित करता है, जिससे दंड का जोखिम कम होता है और नियामक पालन मज़बूत होता है। कुल मिलाकर, RPA और AI का एकीकरण एनबीएफसी को उत्पादकता बढ़ाने, त्रुटियों को कम करने और ग्राहकों को निर्बाध सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

5. व्यक्तिगत वित्तीय उत्पाद

AI की मदद से एनबीएफसी पारंपरिक एक जैसे उत्पादों की बजाय ग्राहकों के व्यवहार, प्राथमिकताओं और खर्च पैटर्न का विश्लेषण कर अनुकूलित वित्तीय समाधान प्रदान कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, AI ग्राहक की आय प्रवाह के अनुसार लचीली ऋण पुनर्भुगतान योजनाएँ बना सकता है, जिससे किस्तों का बोझ कम हो और भुगतान अनुशासन बेहतर हो। इसी प्रकार, गतिशील ब्याज दरें तय की जा सकती हैं, जिनमें मज़बूत पुनर्भुगतान क्षमता वाले ग्राहकों को बेहतर शर्तें दी जा सकें। इसके अतिरिक्त, भविष्यसूचक विश्लेषण (Predictive Analytics) की मदद से ऐसे वित्तीय नियोजन उपकरण विकसित किए जा सकते हैं जो शिक्षा ऋण, गृह ऋण या सेवानिवृत्ति बचत जैसी भविष्य की ज़रूरतों का पहले से अनुमान लगाकर समाधान सुझाएँ। इस स्तर की व्यक्तिकरण न केवल ग्राहक संतुष्टि और वफादारी को बढ़ाता है, बल्कि क्रॉस-सेलिंग और अप-सेलिंग के ज़रिए एनबीएफसी की लाभप्रदता भी सुनिश्चित करता है।

6. नियामक अनुपालन को सुदृढ़ करना

एनबीएफसी के लिए नियामक अनुपालन (Regulatory Compliance) अत्यंत महत्वपूर्ण है। नियमों का उल्लंघन न केवल भारी जुर्माने का कारण बन सकता है, बल्कि प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुँचाता है। बदलते नियामक परिदृश्य में मैन्युअल निगरानी समय लेने वाली और त्रुटिपूर्ण हो सकती है। इस चुनौती से निपटने के लिए, AI-आधारित उपकरण समय पर और सटीक रिपोर्टिंग सुनिश्चित करते हैं, अनुपालन खामियों का पता लगाते हैं और एनबीएफसी को नियामक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाए रखते हैं। स्वचालित अनुपालन जांच प्रक्रियाओं की निरंतर निगरानी करती है और किसी भी विचलन की पहचान समय रहते कर लेती है। इसके अलावा, AI-सक्षम ऑडिट ट्रेल्स हर लेन-देन और प्रक्रिया का पारदर्शी और विस्तृत रिकॉर्ड उपलब्ध कराते हैं, जिससे निरीक्षण के दौरान अनुपालन को साबित करना आसान हो जाता है। भविष्यसूचक एल्गोरिद्म संभावित उल्लंघनों का पहले से पता लगाने में भी सक्षम होते हैं, जिससे समय रहते सुधारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं। इस प्रकार, AI को अनुपालन ढांचे में शामिल करके एनबीएफसी जोखिम को काफी हद तक कम कर सकती हैं, परिचालन ईमानदारी बनाए रख सकती हैं और नियामकों व हितधारकों का विश्वास जीत सकती हैं।

हेमलता शर्मा
संयुक्त महाप्रबंधक (आई टी)

Letters to India : Vision for Viksit Bharat 2047

We celebrated our 79th Independence Day with a number of competitions based around patriotic themes. The set of activities included oration, crafting, crossword, quiz, etc.

One of the events was a written activity titled ***"Letter to India"*** where participants wrote about their ***Vision for Viksit Bharat 2047.*** The competition featured fabulous entries out of which three letters were adjudged for podium finishes. These exceptional ideas flavored with miniscule literary skills are being shared in this edition of HUDCO Darpan.

To,
My Motherland,
The Golden Bird of Ancient World,
Present Day Asia

15th August 2025

Subject - My vision for Viksit Bharat 2047

My lovely motherland - India,
Namaskar, with a smile that is more hopeful than it has ever been !

As I present my ideas about how I envision you to be in 2047, I sincerely hope I find this letter back as a 46-years old responsible citizen, proudly smiling over achieving all the aspects that I am going to discuss in this letter.

We call you by different names - India, Bharat, Hindustan, Homeland, etc. but the feeling remains the same - of extreme joy and pride that I am fortunate enough to be born in a country with centuries of legacy and heritage.

But, a nation that is home to over 1.5 billion people surely deserves a better status in terms of development. I envision Bharat of 2047 to have a robust and uniform education system where primary and secondary education will have same syllabus unlike being divided into multiple state boards as of today. I dream of practical and employment worthy knowledge being imparted in colleges and universities that would have international acclaim and would draw attention from sincere candidates across the globe.

I wish that the taxpayers' money would be utilized properly with a single uniform tax system that would benefit the nation but at the same time provide an upliftment in the living standards of taxpayers, unlike leaving them frustrated begging for, basic amenities like roads, infrastructure, clean air, safety, etc. as prevalent today.

I dream of having elected representatives or leaders who will have a basic criteria of education before they enter into our parliament for making decisions related to us. Their children would study in government schools and they would be bound to be treated in government hospitals unlike flying away to European nations for such privileges.

I envision that the reservation system in my motherland would be fair to all, in a way that if one member of the family has benefitted from the reservation system, it should not be available to the coming three generations of that individual.
I aspire a legal system that has the same rules for each and every citizen of India, not only on paper but in reality, a law that does not differentiate on the basis of religion, caste, creed, financial status, powerful positions and truly defines the constitutional articulation of equality and secularism.

In 2047, I dream of an India that has a higher ranking on the Happiness Index and Hunger Index, an India where the financial divide between different strata of society is slightly bridged, an India that has a control over its ever growing population, an India where the media is well and truly free to show the reality and of course, an India where women feel safe beyond the nine days of Navratri.

My Vision for Viksit Bharat 2047 would be achieved when India smiles collectively and when peace prevails across the country.

With a hope to write again to you about the positives,

Thanking you!

Yours sincerely,
A 24-year old hopeful young citizen of India.

Anand Kumar
TO (CC)

To,
PMO
7 Lok Kalyan Marg
New Delhi

Date - 25.07.2025

Subject: **People of India's Vision on development of India by 2047**

Respected Sir,

It is a pleasure to write to you I am very much happy to express my vision on the way India will become a develop nation by 2047.

India is gradually going towards to its centenary in 2047. In this time India will become a "Developed Nation". To achieve this some short term and long term goals should be taken.

Now our country is on the top five nation in terms of economy & also in terms of Gross Domestic product (GDP). It is also in 3rd rank in Power Purchs Parity (PPP). So, it is clear that this country is going good. The sector which should be developed in fast rate to achieve the targets are as follows:

- Economic Growth & Industrialization: To become a developed nation our country needs to develop at GDP rate @ 7%-8% continuous for more than twenty years and more. India's per capita income should be increased for economic growth. To achieve this the following sectors need to boost up:
  - Manufacturing: India needs to grow its manufacturing sector. A flagship scheme like 'Make In India" was introduced in 2014. India should go for world market, & for manufacturing in India & export. Example- companies like Apple, Samsung, Mercedes are manufacturing in India to capture the Indian Market.
  - Digital India: This scheme was launched in 2015 to boost the IT & computer sector. In digital India program NPCI has developed UPI payment system, in every year more than 10 billion transactions are happened.
- Education & Social Justice: Education is very important for any nation's future. Our country needs to take steps to improve the following:
  - *Education for All* : Make school education from pre-school up to class 12 free for everyone. Use "Samagra Shiksha Abhiyaan" to make learning more fun, interactive and technology-friendly.
  - *Higher Education & NEP Implementation :* Top institutions like IITs, IIMs, AIIMS should update their courses & rules to match world standards. The New Education Policy (NEP 2020) focuses on AI and digital skills, but it must be properly put into practice in colleges and universities.

- **World Class Health Care:** Health care sector is the backbone of our country. India needs to evaluate & improve the following sector:
    - Ayushman Bharat
    - Improve health in state government sector

- **Infrastructural Development:**
    - Smart City: 100 smart cities needs to be developed & ground report should be analyzed and work on them.
    - Road & Transport: Highways rail, metro, high – speed rail those flagship project needs to be seen very carefully & needs to develop accordingly we can take foreign research to improve.

- **Good Governance:**
    - Improvement in Judiciary: First track court needs to do the work in proper ways.
    - Police Reform: Police training needs to be in current time & situation basis not in rule.

- Women empowerment: Govt should work on women empowerment. Organization like HUDCO have 30% women power. This is good.

- Foreign Policies: India should take more G20, G7, BRICS, GUWA membership & organize program to improve

- Social Equality: Social reforms is needed for a prosperous nation.

This will be work thoroughly to prosper, India will take steps small steps & large steps to achieve and it will be develop nation by 2047 I believe.

Yours faithfully,
Citizen of India

Kuntal Ghosh
TO (P)

To,
My beloved Bharat Mata
India @ 2047 - Visit Bharat with human face
South Asia, Planet Earth
PIN: Humanity 204 FIN

Date- 24.07.2025

Sub: **India @ 2047 – My Vision for a Developed Bharat**

My beloved Maa Bharti,

It's such a humble & rare opportunity for a child to write not about his dreams but about the dreams he holds for his mother. While I pen down this letter to you, my heart is filled with pride and also sense of responsibility; for you have given me my identity, values and purpose and today I write to you about a Vision I nurture in my heart for you to become an India which is a developed nation by the centenary year of its independence but at the same time envisioning a Viksit Bharat whose heart beats not only in terms of progress but also filled with empathy. I envision a *developed India with a HUMAN FACE* where GDP rises but along with a rise in GNH-Gross National Happiness. An empathetic India rooted in ancient culture, retaining to pure soul where people-progress comes first, where quality of life is more important than quantity of wealth, compassion given priority over competition & opportunity chosen over privilege.

A development model with human face - India's unique model. The ancient philosophy of "वसुधैव कुटुम्बकम्" (whole earth is one family) is rooted in India's heart and it guides our policies, partnerships, growth, etc. As our PM Mr. Modi stated, India becoming a developed nation in not just a milestone but a civilizational mission, a Kartavya Kaal (period of duty) for every Indian to restore India to its deserving place of becoming 'Vishwaguru' by 2047. So many countries have traversed this transition from a Developing to a Developed nation but for India, it's not the the goal but the way we reach the goal of Developed by 2047 that makes it unique i.e. Sabka Saath, Sabka Vikas - a development which comes with compassion, inclusivity & sustainability of one & all.

"Development is not real until the last person in the line is included"
-Mahatma Gandhi

My mother, let me now elaborate my vision for your development into. VishwaGuru @ 2047 by detailing out the PILLARS OF DEVELOPMENT.

- An Inclusive Bharat: An India where no matter which caste, creed, gender, old or young, metro or villages you belong to, every citizen has an equitable access to job opportunities, basic amenities like potable water, affordable house over head, voice is heard. A Viksit Bharat where the last person in the line is heard first. Economic development happens where there is equitable distribution of wealth to all.

- **Enlightened Minds nurtured in India @2047** : Access to Education is going to be the cornerstone in developed India. My vision is an India where every kid has equitable access to quality, future-ready education irrespective of his/her socio-economic background where curiosity is encouraged, innovation and creative minds are rewarded with teachers not just teaching but opening up minds by kindling children's malleable minds. This India will be guided by ethics, values inculcated in the virgin minds which are the beacons of hope for India.

- **A Universal and Compassionate, Affordable Healthcare to all** : Good Health is the foundation for a productive India. Our dreams of becoming a Viksit Bharat sees that in 2047, every Citizen gets access to public Healthcare at affordable prices.

- **Terror Free India**
- **Taking Care of Elders**

- **A Global Power both Economic and Moral :** We India will not only be the economic superpower but also a moral compass for the world. We will be the voice of peace in conflict, partner for other developing countries, our help during Covid times showed that growth with compassion can co-exist.

- **An India rooted in culture**
- **A Green India @ 2047 which is environment conscious**

So, I envision an India @ 2047 which will be a developed nation - a superpower not only in economic terms but a superpower of humanity. India will be known not just for exporting products but for exporting values. India @ 2047 will be a India which will have equality not on demand but as a guarantee.

India @ 2047 will be where every mind will live without fear, where hearts will be filled with nation first and where everybody will excel in their respective fields.

My pledge for India @ 2047 is to do my best not only in words but in action.

With love and hopes, eyes filled up with dreams !

Your Child

Deepa Krishnan
JGM (E)

ओज भरी वाणी

आज भी परिभाषित है,
उसकी ओज भरी वाणी से
निकले हुए वचन,
जिसका नाम था विवेकानंद।

उठो, जागो, सिंहो
यही कहा था कई सदियों पहले
उस महान साधू ने
जिसका नाम था विवेकानंद।

तब तक न रुको,
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो
कहा था उस विद्वान ने
जिसका नाम था विवेकानंद।

सोचो तो तुम कमजोर बनोगे,
सोचो तो तुम महान बनोगे
कहा था उस परम ज्ञानी ने,
जिसका नाम था विवेकानंद।

दूसरो के लिए ही जीना है
अपने लिए जीना पशु जीवन है
जिस स्वामी ने हमें कहा था,
उसका नाम था विवेकानंद।

जिसने हमें समझाया था कि
ईश्वर हमारे भीतर ही है
और इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है
उसका नाम था विवेकानंद।

आओ मित्रो हम एक हो !
और अपनी दुर्बलता से दूर हो
हम सब मिलकर एक नए समाज,
एक नए भारत का निर्माण करे।
यही हमारा सच्चा नमन होगा
भारत के उस महान संत को
जिसका नाम था स्वामी विवेकानंद !!

सोनिया
वरिष्ठ प्रबंधक (से.)

एक दूजे के लिए

(पक्षी का जोड़ा)

यह सच्ची कहानी पक्षी के एक जोड़े की है। पिछले कुछ दिनों से मुझे यह सुंदर जोड़ा अक्सर सुबह के समय दिखाई देता था। दोनों कभी बिजली के तार पर बैठे हुए दिखते थे, कभी किसी पेड़ पर, कभी कुछ बात करते रहते थे ,कभी दोनों शांत रहते थे। दोनों में से कोई एक जैसे ही उड़कर दूसरी डाल या दूसरे पेड़ पर बैठता था, 5-7 सेकंड के भीतर दूसरा भी उड़कर वही पहुंच जाता था। मैंने कई बार सोचा कि अगर कभी पास के किसी डाल पर बैठे हुए दिख जाएं तो दोनों की फोटो खींच लूंगा मगर कभी ऐसा अवसर नहीं आया।

कल सुबह टहलते समय मैंने दूर से देखा तो मुझे ऐसा लगा कि एक पक्षी सड़क के किनारे जमीन पर बैठा हुआ है। जब मैं कुछ पास गया तो मुझे दूसरा पक्षी लेटा हुआ दिखाई पड़ने लगा । मैं बड़ी तेजी से उनकी ओर बढ़ा ,जब दूरी 4 -5 फीट ही रह गई , तो उनमें से एक उड़कर पेड़ पर बैठ गया। दूसरा साथी बेसुध पड़ा हुआ था मैंने उसे हिलाने डुलाने की कोशिश की तो समझ में आया उसके प्राण पखेरू उड़ गए हैं। मैंने उसे सड़क से उठाकर मिट्टी के बीच डाल दिया ताकि उसका पार्थिव शरीर पंचतत्व में मिल जाए।

भले ही उन पक्षियों को मैंने पाला नहीं था लेकिन कुछ दिनों से उनके आनंदित जीवन को देख रहा था ,मुझे बहुत दुख हुआ दिनभर कई बार उन्ही के बारे में सोचता रहा। कभी मै कहता, भगवान उसके साथी को भी उठा लो वह जीकर क्या करेगा। इतने प्रिय साथी से बिछड़ कर उसका जीवन तिल - तिल मरने के समान ही है।

कभी लगता था पक्षियों की संख्या तेजी से कम हो रही है, किसी तरह से उसके साथी को बचा लो, उसको उसके इस दुख से उबार लो, अगले साल फिर से उसे परिवार बनाने का मौका मिल जाएगा और उसकी पीढ़ी आगे चल पड़ेगी। दिन में इसी तरह की बातें कई बार मन में आती रही। शाम को जब मैं टहलने निकला तो अंधेरा हो गया था लौटते समय अचानक मन में ख्याल आया कि चलो उसी जगह पर फिर से एक चक्कर लगा लिया जाए। मित्रों भगवान का फैसला देखकर मुझे दुख हुआ या सुबह जीवित बचे पक्षी के प्रति मेरी चिंता कम हो गई, बताना बड़ा मुश्किल है। स्ट्रीट लाइट की रोशनी में मैंने देखा सुबह वाली जगह में पक्षी के शव के कुछ अवशेष बचे हुए थे, दो तीन कदम की दूरी पर उसके साथी का भी शव पड़ा हुआ था। लगता है अपने साथी के शव के इर्द-गिर्द उसने जीवन के अंतिम कुछ घंटे गुजारे और स्वयं भी अनंत यात्रा में निकल पड़ा।

हमने पशु-पक्षियों के आशियाने छीन लिए हैं ,जंगलों की कटाई तेजी से हो रही है ,पोखर तेजी से सूख रहे हैं, हम सबको चिंता है तो सिर्फ अपनी। क्या इस जोड़े की मौत के लिए हम सब जिम्मेदार हैं या फिर भगवान ने उन दोनों का अंत इसी तरह लिखा था !

साकेत श्रीवास्तव
चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय

Panel Discussion on Green Buildings in Residential Sector

The Centre of Excellence in Urban Planning and Design (CoEUPD) of IIT Kharagpur on May 5th, 2025 hosted a one-day awareness workshop on "Green Buildings in the Residential Sector" at the IIT Kharagpur Research Park, Kolkata. The workshop aimed to deepen understanding of sustainable construction practices, energy-efficient housing, and green building techniques. Experts discussed critical aspects of green buildings, including global trends, India's future directions, and government initiatives designed to promote sustainable architecture.

I attended the Workshop on Green Buildings as a speaker in the Panel Discussion on the topic "Are Green Buildings Just a Trend or a Necessity?". The panel discussion featured a distinguished ensemble of experts, including Ms. Shakuntala Ghosh, Principal Architect and Partner at Ghosh, Bose and Associates; Dr. Himadri Guha; Mr. Debesh Chakraborty, Regional Chief of HUDCO (Kolkata); Mr. Durga Prasad Konar, Chief Engineer of CPWD (Kolkata); Mr. Rajneesh Kumar and Mr. Sanjay Kumar, Deputy General Managers at the State Bank of India, Kolkata. The session was presided over by Prof. Chattopadhyay and attended by other professors of IIT, Kharagpur. Eminent developers from Kolkata and Kharagpur, school students, scholars

and professors from IIT, Kharagpur attended the workshop.

I deliberated on HUDCO's contributions for Green Building and Infrastructure through Loans, Consultancy Services, Research & Training and CSR initiatives besides various Govt. of India Programmes. I emphasized the importance of green buildings in achieving India's Net Zero target. I also actively contributed in the Panel Discussion on the subject topic and attended the queries raised by the audience.

The discussion highlighted the government's role in promoting green practices through incentives for solar panels, building retrofitting, and sustainability. Panelists debunked the myth that green buildings are too expensive; with the right financial instruments and incentives, they are both feasible and necessary. A key point raised during the discussion was the importance of proper air conditioning practices, such as using drapes or screens on windows to reduce cooling costs and make the room cooler with less energy consumption. Maintenance of green building infrastructure, especially facilities like Sewage Treatment Plants (STPs), was also discussed. If built to the proper specifications, these systems can be easily maintained, ensuring the long-term sustainability of green buildings.

The panel discussion concluded with a 'Green Pledge' inspiring participants to embrace a mindset focused on a future where green buildings are the standard, not the exception.

Debesh Chakraborty
Regional Chief - Kolkata

My HUDCO Story So Far:
From Interview Hall to Workplace

On 27th July 2024, I came across HUDCO's recruitment notification for Trainee Officer on a Telegram group. To be honest, it was the first time I had heard about HUDCO. With only three Mechanical seats, I did not expect to get shortlisted. Yet, to my surprise, I received an interview call and found my name at 7th rank. With little confidence but encouraged by the travel reimbursement, I decided to attend the interview scheduled on 19th December 2024 at the Corporate Office, New Delhi.

From nervously waiting in the interview hall to proudly working in the same space, my HUDCO journey so far has been nothing short of surprising and fulfilling.

I still remember waiting in the conference hall before my turn, feeling nervous with a lot of questions running through my mind—since I come from an engineering background and HUDCO is an NBFC, I wondered what type of questions they might ask. Around me, people were coming out of their interviews, all asking each other, "How was the panel? What questions did they ask?"—which only added to my curiosity and nervous excitement.

A few days later, on 27th December, while returning from a cricket tournament, I received a mail from HUDCO HR. Expecting it to be a TA reimbursement, I was stunned to find that I had been selected for the post of Trainee Officer (Mechanical).

I joined HUDCO on 3rd February 2025— in the same conference hall where I had once awaited my interview. What followed was a well-structured induction programme at HSMI, Khel Gaon, which not only introduced us to HUDCO's vision and business areas but also gave us opportunities to interact across diverse backgrounds—engineers, CAs, CS, CC, HR and CSR professionals, both freshers and experienced. The sessions were interactive and engaging, ranging from business modules to group activities, and even fun ice-breakers that helped us bond quickly as a batch. After this, I had the chance to undergo a week's training at RO Vijayawada, which provided me with valuable exposure to HUDCO's operations at the ground level and a deeper understanding of its business approach.

Back at the Corporate Office, I joined towards the end of February and was allotted to the newly created International Cooperation Cell (ICC), which works on HUDCO's international linkages through platforms like UN-Habitat, CITYNET, APMCHUD etc. March ended on a memorable note with a three-day excursion to Jim Corbett and Nainital, where bonding with seniors and colleagues over safaris, Naini Lake, dumb charades and a lively DJ night made me feel part of the HUDCO family.

In the following months, I was entrusted with additional responsibilities, in the MoU Cell, which coordinates with MoHUA on performance and compliance parameters. Alongside work, every month HUDCO organised training programmes at HSMI on diverse subjects—from technical areas of housing and sustainability to management tools like MS Project etc—which helped in continuous learning and exposure.

August brought two new milestones: first, I had the privilege of organising a Crossword Quiz as part of Independence Day celebrations (with feedback ranging from "UPSC-level tough" to "mazedaar, enjoyed it"), and later in the month I was given responsibility under the Urban Invest Window, a new initiative supporting government missions such as AMRUT 2.0 and Urban Challenge Fund.

These months have been filled with learning, warmth, and encouragement, making me proud to be part of HUDCO.

Vishwajeet Jaiswal
TO(P)

Marriage – A Problem or A Solution?

In today's fast-paced world, people get updates on everything at their fingertips. Many roles traditionally associated with marriage are now being outsourced or replaced. Monetary needs are met through high-paying jobs and credit cards. Vehicle rides are taken care of by app-based companies. Household chores are handled by service providers. Children are often born through IVF and raised by nannies. Parents may be working from home, yet ironically, not truly present at home. Earlier, the scenario was different. Husbands and wives depended on each other for day-to-day activities. Marriage was a system of mutual give and take, where responsibilities were shared. Children received full attention from their parents, and emotional bonds mattered more than money.

Today's youth, however, look at marriage differently. They have seen their parents' generation and are reluctant to repeat the same patterns. Inspired by Western culture, they find themselves caught between Western individualism and Indian traditions. This "see-saw" often tilts based on convenience. Many enjoy freedom and independence in their twenties, only to suddenly realize in their thirties that they must carry forward their cultural legacy. In this haste, marriage often becomes a rushed decision, competing with their career priorities.

If this trend continues, the very foundation of family life may weaken. Over the next two decades, marriage could shift from being a necessity to a luxury. Our society may then mirror several European countries, where declining marriages and birth rates have already led to economic stagnation and lower GDP growth.

Vishal Kumar
TO (F)

ऐ वतन....

ऐ वतन कुछ ऐसा कर,
कि मेरा लहू तेरे काम आ जाए,
जब जब तुझको जरूरत पड़े,
मेरे लहू से तुझको सींचा जाए।

जब जब माँ तू बुलायेगी,
तेरे लिए मैं आऊंगा,
तुझको कुछ न होने दूंगा,
फिर चाहे खुद शहीद हो जाऊंगा,
फिर चाहे खुद शहीद हो जाऊंगा।

लक्ष्य अपना साध लिया है,
निशाना लगाने की करनी अब तैयारी हैं,
दूरी की कोई परवाह नहीं,
पथ पर पत्थर चाहे जितने भी भारी है

कांटो को भी अब चीर देंगे,
कलम से जो तीर चलेंगे,
आकाश भी अब शंखनाद करेगा,
स्वयं महेश भी धरती पर उतरेगा,
जब धनुष पर मेरी प्रत्यंचा चढ़ेगी,
बिजली घनघोर आतिशबाज़ी करेगी,
भूतल भी तब कपकपा उठेगा,
जब जब मेरा कमाण उठेगा

और जब मैं लक्ष्य भेद दूंगा,
रक्त की वर्षा में स्नान करूंगा,
संसार भी तब सर झुकायेगा,
समस्त ब्रह्मांड भीषण भयभीत हो जाएगा,
न रुद्र, न काल, न नरसिंह, न दशावतार,
तब कौन मुझे ललकारेगा,
मैं अमर, मैं अजय, मैं ही मृत्यु,
मुझे कौन मारेगा?
मुझे कौन मारेगा?

ऋषभ चौधरी
प्रशिक्षु अधिकारी (वित्त)

जिंदा रहना है तो ...

हकीकत मौत की लटकी है पीठ पर हरदम
सामने आए तो जिंदा दिली से तैयारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

रक्त -मांस -स्वेद से सजाई जिसने शख़्सियत तुम्हारी
आखिरी सफर में कंधों की जिम्मेदारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

लील लेता घोर अंधेरा तुम्हें पल-पल हरपल
रौशनाती राह के दिये में कुछ तो साझेदारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

हक का मीठा दरिया पीते हो भरे-पूरे हाथों से
फ़र्ज़ के खारे समंदर की भी जवाबदारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

न जाने कितने मुखौटों की आड़ मे डसते हैं
आस्तीन के सांपों को परखने में समझदारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

घुटने टेकना, जोड़ -तोड़ करना, है तौहीने हुनर
इन्सान हो कुछ तो खुद्दारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

निराशा की लपटों से ख़ाक हों चाहे सपने सारे
दिल में अपने मेहनत कशों- सी चिंगारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो .

ज़मीं -जायदाद, धन - दौलत चाहे बटोर लो जितनी
पर संस्कारों की गठरी हमेशा भारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

मत इल्जाम दो देश- दुनिया और हालातों को
अपनै हौंसलौं की बुलंदी में ईमानदारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

पराये देशों की चकाचौंध में भटकते चिरागों!
स्वदेश की मिट्टी के लिए कुछ तो वफादारी रखो
जिंदा रहने की तरकीबें बहुत सारी रखो

कुलदीप कौर
कृति वालिया की माताजी

hudco
A NAVRATNA CPSE

Climate Change in India: Patterns, Impacts and the Solutions

Climate change is no longer a distant fear; it is India's present reality. It is happening right now and all of us are witnessing the devastating effect of climate disaster. Rising heat, unpredictable monsoons, intense rainfall, cloud blast, and melting Himalayan glaciers are melting dangerously in ways that affect millions. The damages are not only environmental but also social and economic, demanding urgent attention.

Climate Risks in India:

1. **Heat Wave:** India is warming faster than the global average. The World Meteorological Organization says that Asia, including India, is heating almost twice as quickly as the rest of the world. In 2024, our country had seen its hottest year since records started in 1901. Prolonged heat waves caused over 43,879 heatstroke cases and around 446 deaths have been seen in just few years. The impacts went beyond the health of countrymen. Agriculture yields fell, water supplies dried up, and electricity demand sky rocketed. The monsoon, crucial for farming, has grown non friendly and unpredictable which continuously damages crops. Long dry spells are often followed by sudden heavy rainfall, leaving cities flooded and villages facing both drought and flood due to uncertain behavior of the nature. Climate change is not just about weather, it is a challenge to survival, livelihoods, and economic stability.

2. **The 2025 Punjab Floods:** The Punjab floods of August 2025 have shown us how extreme weather and human actions together can collectively cause this type of disaster. The damage was staggering, around 1,400 villages in 23 districts were submerged, 3.5 lakh people were affected, and more than 2.5 lakh acres of cultivation land were under flood water. At least 29 lives were lost, while 20,000 people had to be rescued till now. The floods revealed how poorly managed infrastructure can exacerbate climate disasters.

3. **Himachal Pradesh and Other Disasters:** Himachal Pradesh has become one of India's most vulnerable states. In 2023, floods killed over 300 people, and in 2025, cloudbursts and landslides again devastated the districts like Mandi, Kullu, and queen of hills - Shimla. These repeated tragedies highlight how deforestation, glacier retreat, and reckless construction worsen rainfall impacts in the fragile Himalayas. Heavy rains in Himachal Pradesh and Jammu & Kashmir, combined with emergency dam releases, caused the Ravi, Beas, and Sutlej rivers to overflow.

4. **Yamuna Floods :** The Yamuna river in Delhi crossed danger levels in August 2025, forcing 10,000 evacuations and causing 130 deaths. Uttarkashi in Uttarakhand saw a flash flood sweep away homes and hotels. Projects like the Char Dham highway, involving hillside cutting, have further destabilized already fragile slopes.

Solutions

India cannot stop climate change immediately, but it can reduce the damage through smarter strategies. It is very true that we all want development but at what cost. We have to ask ourselves whether rapid development by destroying ecology and bio diversity is sustainable in future. We have to follow such measures to slow down climate change gradually:

- *Early Warning*: Expand forecasting and mobile alerts in local languages. (Government has implemented this)
- *Resilient Infrastructure*: Improve urban drainage, regulate floodplain construction, and manage dams more safely. (Cities like Gurugram, Mumbai need to implement this immediately).
- *Make Room for river*: This concept is life saving at the time of flood. Unauthorized construction on river banks should be stopped. During cloud burst water needs space to flow. As recently observed, DPRs are being prepared without calculating the soil strength and severity during monsoon. The natural flow path of the river is blocked by construction. There is an urgent need to stop unapproved construction.
- *Ecosystem Protection*: Restore forests, wetlands, and floodplains as natural defenses.
- *Climate-Smart Farming*: Encourage drought-resistant crops, micro-irrigation, and crop insurance. (West Bengal and Madhya Pradesh are giving good results by adopting this method)
- *Community Preparedness*: Training of volunteers for disaster response and expand Heat Action Plans.

- Policy Action: PSUs and Government should finalize project after approval of environment department for contraction of dams, highways in sensitive ecological zone and hilly area.

Conclusion

The disasters of 2025 show three lessons: climate change is intensifying extremes, poor human choices make them worse, and adaptation must be a priority. The floods in Punjab and Himachal Pradesh, Delhi, Bihar combined with deadly heat waves, prove that climate change is not tomorrow's problem, it is today's crisis. Unless India strengthens resilience and embeds climate planning in development, the costs will only rise.

Kuntal Ghosh
TO (P)

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
कार्यालय: हडको भवन, कोर-7-ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003
सी आई एन : L74899DL1970GOI005276